International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भगवद् गीता में पर्यावरण दर्शन

डॉ0 शशि नौटियाल
एसो0प्रो0 एवं विभागाध्यक्ष
इतिहास विभाग, जे0वी0 जैन कॉलेज
सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)
ईमेल –shashijvjc@gmail.com

प्रशान्त राणा
जूनियर रिसर्च फैलो
इतिहास विभाग,
जे0वी0 जैन कॉलेज, सहारनपुर (उ0प्र0)
ईमेल –Prashantranakatla@gmail.com

सारांश

वैदिक साहित्य में पर्यावरण प्रकृति संरक्षण की चेतना व उसके प्रति कृतज्ञता का भाव उन्नत अवस्था में विद्यमान है व वैदिक काल में प्रकृति व मानव एक–दूसरे के पूरक रहे हैं, वहीं पश्चिमी संस्कृति के किसी भी कालखण्ड में ऐसी कोई विशेष परम्परा दृष्टिगोचर नहीं होती है। भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि उन्होंने मनुष्यों व देवताओं की यज्ञ द्वारा उत्पत्ति की व मनुष्यों से देवताओं के निमित्त निरंतर यज्ञ सम्पादित करने को कहा जिसके कारण देवता मनुष्यों को मनवांछित वस्तुएँ प्रदान करते रहें। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने पर ये वैनिककाल के देवी देवता सूर्य, इन्द्र, वरूण, मारूत, गायत्री आदि पर्यावरणीय घटकों का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रभु श्रीकृष्ण कहते हैं कि पर्यावरण रूपी देवताओं द्वारा प्रदत्त भाग की वस्तुओं को भोगने से पूर्व उनके संरक्षण व कृतज्ञता का भाव रखना आवश्यक है अन्यथा मनुष्य चोर कहलाता है। गीतोपविषद् के अनुसार मनुष्यों को भौतिक इच्छाओं का त्याग कर पर्यावरण–प्रकृति संतुलन स्थापित करना चाहिये क्योंकि प्रत्येक पर्यावरणीय भाग श्रीकृष्ण का अंश है व प्रभु की अध्यक्षता में कार्य करते हैं। आधुनिक मानव भौतिक संसाधनों के भोगों की लालसा के कारण पर्यावरण को क्षति पहुँचा रहे हैं। भगवान श्रीकृष्ण मानव जाति को पर्यावरणीय जैव–अजैव घटकों के प्रति भक्तिभाव रखने एवं इनके उपयोग में आत्मनियंत्रण रखने का निर्देश देते हैं। गीतोपनिषद् के प्रत्येक अध्याय में किसी न किसी रूप में प्रकृति–पर्यावरण का वर्णन प्राप्त होता है।

बीज शब्द – भगवद्गीता, श्रीकृष्ण, पर्यावरण–प्रकृति, संरक्षण, यज्ञ, जीव

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पर्यावरण किसी जीव के चारों ओर घिरे भौतिक व जैविक दशाएँ एवं उनके साथ अंतःक्रिया को कहा जाता है। यह एक अविभाज्य समष्टि है तथा भौतिक, जैविक व सांस्कृतिक तत्वों वाले पारस्परिक क्रियाशील तंत्रों से इसकी रचना होती है।[1]

प्राचीन काल में प्रकृति संरक्षण का कोई संस्कार अखण्ड भारतभूमि के साहित्य को छोडकर प्रायः अन्यत्र देखने को नहीं मिलता है। प्राचीन भारत में प्रकृति पूजन को पर्यावरण संरक्षण के तौर पर मान्यता थी। पेड़–पौधों, नदी–पर्वतों, पशु–पक्षियों, जल, वायु सहित प्रकृति के विभिन्न रूपों के साथ मानवीय संबंध जोड़े गये हैं व इस दृष्टिकोण की निरन्तरता बनी रही है। यह दृष्टिकोण भारतीय संस्कृति में कई रूपों में साहित्य, मूर्तिकला, चित्रकला व स्थापत्यकला में परिलक्षित होता है।

भारतीय धार्मिक परम्परा में सिंधु घाटी सभ्यता की मातृदेवी या आदि शिव की प्रतिमा हो, वैदिक धर्म में प्रकृति उपासना हो, जो सूर्य, वायु, जल, पृथ्वी के प्रति कृतज्ञता के रूप में वैदिक साहित्य में प्रतिबिम्बित होता है। बौद्ध धर्म व जैन धर्म में भी यह पर्यावरण चेतना हमें दिखाई देती है।[2]

वैदिक शास्त्रों में वृक्ष की तुलना संतान से की गयी है तो नदी को माता का रूप माना गया है। पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, वनस्पति व महत्पूर्ण पशु–पक्षियों को देवता रूप प्रदान किया गया है। वैदिक साहित्य में प्रकृति के प्रत्येक अवयव के संरक्षण व संवर्धन के निर्देश मिलते हैं। हमारे पूर्वज जानते थे कि पृथ्वी का आधार जल और वन हैं इसलिए उन्होंने पृथ्वी की रक्षा के लिए वृक्ष ओर जल को महत्वपूर्ण मानते हुए कहा है –

"वृज्ञाद वर्षति पर्जन्यः पर्जन्यादन्न सम्भव"

अर्थात वृक्ष जल है, जल अन्न है और अन्न जीवन है।[3]

भगवद्गीता के तृतीय अध्याय में पृथ्वी के विभिन्न अवयवों के विषय में समझाया गया है, उपरोक्त अध्याय का दशवाँ श्लोक निम्न है –

"सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविपयध्वमेष वोऽस्तिवष्टकामधुक्।।"

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उक्त श्लोक में देवता वो शक्ति या दैविक वस्तु हैं जो जीवन निर्वाह हेतु इच्छित वस्तुओं को प्रदान करने का सामर्थ्य रखते हैं और यदि हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो देवताओं के रूप में हमें महत्वपूर्ण पर्यावरण घटकों, वनस्पतियों व जीव–जंतुओं की उपस्थिति प्राप्त होती है।

उपरोक्त अध्याय का श्लोक संख्या ग्यारह निम्न है –

देवान्भावयतानेन ते देवा भवयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।।"

उक्त श्लोक से यह प्रतीत होता है कि कोई भी कार्य जो देवताओं को पुष्ट करता है, व यज्ञ होता है और उसी यज्ञ रूपी कार्य से मनुष्य जाति का कल्याण व उन्नयन होता है।[4]

यदि मनुष्य वायुदेव अर्थात् वायुमण्डल को प्रसन्न रखना चाहता है, तो उसे ऐसे कार्य करने होंगे जिससे वायुमण्डल का संरक्षण व उन्नयन हो, ठीक इसी प्रकार पृथ्वीदेव अर्थात् भूमण्डल को प्रसन्न रखने के लिए कीटनाशकों व रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग बन्द करना होगा तभी पृथ्वीदेव मनुष्य को पौष्टिक उत्पाद देंगे व दीर्घायु होंगे।

उपरोक्त संरक्षण रूपी यज्ञों के अनुसार ही मनुष्य को वर्षा जल व पृथ्वीजल के अनुचित चक्र का संरक्षण रूपी यज्ञ भी करना पड़ेगा एवं नदियाँ जिनको देवियों का स्थान प्राप्त है, उन्हें प्रदूषण मुक्त कर उनकी संरक्षण रूपी भक्ति करनी पड़ेगी। उपरोक्त संरक्षण हेतु कर्म रूपी यज्ञों से मनुष्य पर्यावरण रूपी देवताओं को पुष्ट कर उनसे इच्छित भोग प्राप्त कर अपना जीवन सुखदपूर्वक निर्वाह करता रहेगा।

उपरोक्त अध्याय का तेरहवाँ श्लोक निम्न है –

इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभावितः।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङक्ते स्तेन एव सः।।"

यदि मनुष्य पशु–पक्षियों के विषय में चर्चा तो पायेगा कि ये हर प्रकार से उन्हें लाभ पहुँचाते हैं। अतः इनके उचित देख–रेख का उत्तरादायित्व भी मनुष्य के कंधों पर हैं।[5]

वर्तमान का मानव पश्चिमी विचारधारा के अधीन होकर प्रकृति रूपी देवताओं से इच्छित वर तो चाहता है परन्तु इनके लिए संरक्षण व संवर्धन रूपी उचित यज्ञ नहीं करना चाहता। जिसके कारण इन देवताओं व

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रजाओं के मध्य संबंध कष्टकारी होते जा रहे हैं व पर्यावरण प्रदूषण बढ़ने के साथ–साथ प्राकृतिक आपदाएँ भी बढ़ रही हैं। प्रकृति में उपस्थित इन स्रोतों को जब तक मानव देवता मानकर इनका उचित संरक्षण करते रहे तब तक कोई समस्या नहीं आई परन्तु आधुनिक मानव इन्हें मात्र संसाधन मान बैठे जिसके कारण मनुष्य में इनका स्वामी होने की अनुचित विचारधारा घर कर गई और आपज मनुष्य उसका परिणाम भोग रहा है।

भगवद्गीता के तृतीय अध्याय के बारहवें श्लोक –

"इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङत्के स्तेन एव सः।"

में उल्लेख है कि यज्ञ के द्वारा पोषित किये हुए देवतागण प्रसन्न होकर मनुष्यों को अभीष्ट भोगों के उत्पादों को प्रदान करते रहेंगे, अतः जो व्यक्ति देवताओं द्वारा प्रदत्त इन द्रव्यों व उत्पादों को देवताओं को अर्पित किये बिना ही भोग करता है, वह चोर है। अर्थात् मनुष्य को चाहिए कि वह पर्यावरण रूपी देवता को उसके प्रदत्त भोागें के बदले में संरक्षण व संवर्धन रूपी यज्ञ कार्य प्रदान करें। उदाहरण के लिए यदि मनुष्य वृक्षों से आक्सीजन की इच्छा करे एवं उनकी सेवा न करें, इसी प्रकार नदियों से जल का उपयोग तो करे परन्तु उनके रखरखाव में कोई योगदान न दे तो यह कृत्य चोरी के समान ही माना जायेगा।

इसी अध्याय के तेरहवें श्लोक –

"यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।।"

का अर्थ है कि यज्ञ में शेष रहे अन्न को खाने वाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापों से मुक्त हो जाते हैं और जो पानी मनुष्य केवल अपने शरीर पोषण के लिए अन्न पकाते हैं तो वह पाप ही खाते हैं, अर्थात् देवताओं द्वारा दिये गये भोग की वस्तुओुं को भोगने से पूर्व अनके प्रति यज्ञ यानि किस तरह से उन वस्तुओं की कृतज्ञता को लाटाए इस पर विचार करना चाहिये।

इसी अध्याय के चौदहवें श्लोक में वर्णन है, "सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं और अन्न वर्षा यज्ञ से और यज्ञ वैदिक कर्म से और वैदिक कर्म वेद से और वेद परमपिता से उत्पन्न हैं। इस तरह या में परमपिता ईश्वर सम्बद्ध रहते हैं। अतः यज्ञ एक दैवीय क्रिया है। भगवद्गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

रजोगुण से उत्पन्न भौतिक इच्छायें मनुष्य को भोगों की ओर आकृष्ट करती हैं। श्रीकृष्ण कहते हैं कि मनुष्य को अपनी इच्छाओं का दमन कर, भोगों की लालसा को त्याग कर प्रकृति–पर्यावरण को संतुलित करना चाहिये।[6]

गीतोपनिषद् के चतुर्थ अध्याय में वर्णन है कि भगवान श्रीकृष्ण ने सर्वप्रथम गीता उपदेश सूर्य देव को दिया जो भौतिक पर्यावरण–प्रकृति जगत के सबसे बड़े पोषणकर्ता हैं। उपरोक्त अध्याय में ही उल्लेख है कि ईश्वर सृष्टि की प्रत्येक वस्तु व अवयव में विद्यमान हैं इसलिए कहा जा सकता है कि पर्यावरण का संवर्धन व पोषण ईश्वरीय भक्ति होगी व पर्यावरण का अपघटन ईश्वरीय तिरस्कार होगा। श्रीकृष्ण उपरोक्त अध्याय में कहते हैं यज्ञ से बचे हुए अन्न को ग्रहण करने पर मनुष्य ईश्वर को प्राप्त होते हैं व जो मनुष्य देवता रूपी प्रकृति का पूजन नहीं करते, उन्हें न तो यह लोक और न ही परलोक सुखदायक रहते हैं।[7]

भगवान श्रीकृष्ण भगवद्गीता के पाँचवें अध्याय में कहते हैं कि बुद्धिमान साधु पुरुष भौतिक इन्द्रिय सुख की ओर आकृष्ट नहीं होता है, अपितु सदैव स्थिर मन में रहकर अपने अन्दर निरन्तर आनन्द का अनुभव करता रहता है। वह सांसारिक भोगवादी इच्छाओं व तृष्णाओं में लिप्त नहीं होता है जो इन्द्रियों के संसर्ग से उत्पन्न होती है। जब व्यक्ति को यह वास्तविक ज्ञान हो जाता है कि प्रकृति–पर्यावरण श्रीकृष्ण के अभिन्न अंग हैं व सभी जैव–अजैव वस्तुओं व जीवों का उद्गम श्रीकृष्ण से ही है तब वह सभी कर्म यज्ञ प्रकृति के हितार्थ को ध्यान में रखकर करता है, अतः समग्र मानवता के लिए कार्य करना सबसे बड़ा कल्याण कार्य है। जो व्यक्ति सांसारिक इच्छाओं व भोगों की लालसा को दृष्टिगत रखकर कर्म करता है वह वास्तव में पर्यावरण व जीवों को क्षति पहुँचाता है व किसी की भी सहायता नहीं करता है। इन्द्रियों के स्पर्श से जो भोग किए जाते हैं, वे वस्तुतः दुखदाई होते हैं, उनका आदि, मध्य व अंत दुखदायी ही होता है। जो सिद्ध पुरुष व ज्ञानी स्वयं को सांसारिकता से विमुख कर प्रत्येक जैव–अजैव वस्तुओं में श्रीकृष्ण का रूप देखता है वह सदैव शांति प्राप्त करता है व ईश्वरीय ब्रह्म निर्वाण को प्राप्त होता है।[8]

भगवद्गीता के सातवें अध्याय में उल्लेख है कि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश प्रभु श्रीकृष्ण की प्रकृति हैं और जगत के समस्त जीव जो प्रकृति के साधनों का उपभोग कर रहे हैं, वो श्रीकृष्ण की अन्य पराशक्ति से युक्त हैं। सभी प्राणियों का उद्भव श्रीकृष्ण की शक्ति द्वारा हुआ है। सम्पूर्ण पर्यावरण–प्रकृति श्रीकृष्ण पर ही आश्रित है। उपरोक्त अध्याय में वर्णन है कि श्रीकृष्ण जल में रस हैं, सूर्य व चन्द्रमा के प्रकाश हैं, पृथ्वी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

की आद्य सुगंध व समस्त जीवों के आदि बीज हैं परन्तु श्रीकृष्ण मूर्ख भोगवादी मनुष्यों हेतु सदैव सदृश्य रहते हैं।[9]

गीतोपनिषद् के नौवें अध्याय में वर्णन है कि सम्पूर्ण जगत श्रीकृष्ण पर आश्रित है व वही समस्त भौतिक जैव–अजैव वस्तुओं की उत्पत्ति करते हैं और सभी पर्यावरणीय घटकों का भरण–पोषण करते हैं। सम्पूर्ण भौतिक जगत श्रीकृष्ण के अधीन है व उनकी इच्छा से बारम्बार प्रकट और विनष्ट होता रहता है। अध्याय के दसवें श्लोक –

"मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्।
हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते।।"

में प्रभु श्रीकृष्ण कहते हैं कि भौतिक प्रकृति उनकी शक्तियों में से एक हैं व उनकी अध्यक्षता में श्रीकृष्ण कर्मों के स्वभाव अनुसार प्रत्येक जैव–अजैव वस्तुओं की रचना करते हैं व भोगी और सांसारिक व्यक्ति इस मर्म को समझ नहीं पाते हैं व व्यर्थ की इच्छाएँ व व्यर्थ ज्ञान को अपनी आसुरी प्रकृति के साथ धारण किये रहते हैं, वही विद्वान जन प्रकृति–पर्यावरण के सभी भागों को श्रीकृष्ण का अंश मान पर्यावरण की उपासना करते हैं। उपरोक्त अध्याय के सत्रहवें श्लोक में वर्णन है कि श्रीकृष्ण संपूर्ण जगत के माता–पिता व आश्रयदाता हैं, वह ही सूर्य ताप पृथ्वी पर लाते हैं, वर्षा करते हैं, वही प्रकृति की चेतना शक्ति व पदार्थ हैं।[10]

गीतोपनिषद् के दशवें अध्याय के श्लोक संख्या छः –

"महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा।
मभ्दावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः।।"

में श्रीकृष्ण ने स्पष्ट कहा कि सभी मनुष्यों के पूर्वज व समस्त लोकों में निवास करने वाले जीव–प्राणी उनसे ही उत्पन्न हैं। उपरोक्त अध्याय में श्रीकृष्ण अपने वैभव को बताते हैं कि वह किस प्रकार इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड़ में व्याप्त होकर इसे धारण करते हैं व सम्पूर्ण पृथ्वी व आकाश में उनका ईश्वरीय तत्व विद्यमान है। उपरोक्त अध्याय में श्रीकृष्ण स्वयं को प्रकाशमान वस्तुओं में सूर्य व चन्द्रमा, पर्वतों में सुमेरू पर्वत, जलाशयों में, समुद्र, अचलों में, हिमालय में बताते हैं। ठीक इसी प्रकार वृक्षों में पीपल, घोड़ों में उच्चैःश्रवा, हाथियों में ऐरावत, मनुष्यों में राजा, गायों में सुरभि, सर्पों में वासुकि, जलचरों में मगर, पशुओं में सिंह, पक्षियों में गरूड़,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पवित्रकर्ता में वायु, नदियों में गंगा, सर्वभक्षियों में मृत्यु, उत्पन्नकर्ता में कामदेव, महीनों में मार्गशीर्ष, ऋतुओं में वसंत ऋतु, बुद्धिमानों में ज्ञान और समस्त सृष्टि में स्वयं को बीज बताते हैं।[11]

गीतोपनिषद् के अध्यायों के महात्मयों में भी पर्यावरण घटकों जैसे वनस्पतियों, जीव–जन्तुओं, पशु–पक्षियों, जलचरों, व अजैविक पर्यावरणीय अंशों या भागों का सुंदर दर्शन प्राप्त होता है। गीतोपनिषद् के महात्मयों में समुद्र, पर्वतों, नदियों, सूर्य इत्यादि की सुंदर व्याख्या उदाहरण सहित प्रस्तुत की गयी है, जो यह दर्शाते हैं कि धार्मिक दर्शन का मर्म समझाने में पर्यावरणीय घटकों व भागों की सहायता ली गयी है। भगवद्गीता के प्रत्येक अध्याय के महात्मय में पर्यावरण–प्रकृति अंशों का सुंदर दर्शन प्राप्त होता है।[12]

श्रीमद्भगवतम् कथारूप के दशवें स्कन्ध में भी उपरोक्त प्रकार का वर्णन प्रस्तुत किया गया है कि माता यशोदा ने बाल कृष्ण के मुख के भीतर समस्त चराचर प्राणी, अंतरिक्ष समस्थ दिशाएँ, पृथ्वी के समस्त पर्वत, समुद्र, नदियाँ तथा द्वीप–महाद्वीप, पशु–पक्षियों व समस्त वनस्पतियों को देखा, उन्होंने ग्रह–मण्डल तथा सृष्टि को देखा, प्रत्येक वस्तु व प्राणी को नियंत्रित करने वाले काल को देखा, इसके साथ ही उन्होंने जीवों की सहज प्रवृत्ति तथा कर्म की प्रतिक्रियाओं को देखा। इस प्रकार ईश्वर, जीव, प्रकृति व पर्यावरण परस्पर सम्बद्ध है और शाश्वत भी है।[13]

ईश्वर प्रकृति पर दृष्टिपात करके सृष्टि की उत्पत्ति करते हैं, इसको वेदों ने भी स्वीकार किया है। श्रीकृष्ण ने प्रकृति में आणविक जीवात्माएँ प्रविष्ट कर दी हैं जिससे सभी प्राणी भौतिक वर्यावरण में इन्द्रिय तृप्ति के लिए कर्म करते हैं व प्रकृति का उपभोग करते हैं। इस प्रकार मनुष्य भी अपनी इच्छापूर्ति हेतु पर्यावरण क्षति में निरंतर आबद्ध रहते हैं।

भगवद्गीता के महान टीकाकार श्रील बलदेव विद्याभूषण लिखते हैं, श्रीकृष्ण जो यज्ञपुरुष अर्थात् यज्ञों के भोक्ता कहलाते हैं, सभी देवताओं के स्वामी हैं और जिस प्रकार शरीर के अंग पूरे शरीर की सेवा करते हैं। उसी प्रकार सभी देवता उनकी सेवा करते हैं। इन्द्र, चन्द्र, सूर्य, वायु, वरुण रूपी पर्यावरण के देवता भगवान श्रीकृष्ण द्वारा नियुक्त हैं, जो संसार के कार्यों की देखरेख करते हैं और सभी देवता अन्न उत्पादन हेतु प्रचुर वायु, प्रकाश व जल प्रदान करते हैं। सभी जीवों को अन्न खाद्य पदार्थों पर निर्भर रहना पड़ता है न कि औद्योगिक उत्पादों पर व सभी प्रकार के खाद्य पदार्थ, वनस्पति व जल का उत्पादन वर्षा, वायु, पृथ्वी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भौम जल पर निर्भर है, ये सभी देवता श्रीकृष्ण भगवान के दास हैं। भोजन के अभाव व प्रकृति असंतुलन जिससे ईश्वर रूष्ट न हो।[14]

भागवत कथा के प्रथम स्कंद में वर्णन है कि श्रीकृष्ण ने पृथ्वी पर व्यवस्था व शांति स्थापना हेतु शूकर, मत्स्य, कछुआ व नरसिंह रूपी अवतार लिया और राक्षसों अर्थात् अराजकताकारियों का अंत कर पृथ्वी का कल्याण किया जो यह साबित करता है कि भगवान श्रीकृष्ण जीव रूप में भी विद्यमान हैं अर्थात् वन्य व जलीय प्राणी भी साक्षात् ईश्वरीय रूप हैं।[15]

गीतोपनिषद् के ग्यारहवें अध्याय में अर्जुन श्रीकृष्ण के विराट रूप में सूर्य का तेज, सर्पों, सिंह, दिव्य मालाओं, दिव्य पुरुषों, विविध पशु–पक्षियों को देखता है, जो यह सिद्ध करता है कि प्रत्येक जीव–जंतु व वनस्पति ईश्वरीय अंश हैं और उन्हें भी मनुष्य के समान ईश्वर की दृष्टि में समान अधिकार प्राप्त हैं। भगवद्गीता के पंद्रहवें अध्याय के श्लोक संख्या 12 –

"यदादित्यगतं तेजो जगभ्दासयतेऽखिलम्।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्।।"

में श्रीकृष्ण करते हैं कि सूर्य, चन्द्रमा व अग्नि का तेज उन्हीं से उत्पन्न है व उन्हीं की शक्ति द्वारा सभी लोक अपनी कक्षा में स्थित रहते हैं और श्रीकृष्ण चन्द्रमा का रूप धारण कर वनस्पतियों को जीवन रस प्रदान करते हैं।[16]

भगवद्गीता में मन को चंचल व अस्थिर बताया गया है जो प्रकृति सौंदर्य व भौतिक उत्पादों की ओर आकृष्ट रहता है, उसे योगाभ्यास द्वारा आत्मनियंत्रण करना चाहिये व अपनी इंद्रियों को भौतिकवाद से दूर रखना चाहिए। यदि मनुष्य स्वयं को भौतिकवाद, भोगवाद से दूर रखेगा तभी पर्यावरण संतुलन स्थापित होगा।[17]

निष्कर्ष –

भगवान श्रीकृष्ण एक ऐतिहासिक महापुरुष हैं जो इस धरा पर हजारों वर्ष पूर्व प्रकट हुए व पृथ्वी पर 125 वर्ष तक विद्यमान रहे एवं सदैव मनुष्य समान ही आचरण किया परन्तु उनके क्रियाकलाप अद्वितीय थे।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भगवान श्रीकृष्ण के अनुसार प्रत्येक वांछित वस्तु उनके द्वारा ही उत्पन्न व प्रदत्त है क्योंकि मनुष्य प्रकृति से जो भी प्राप्त करता है वह यथार्थ में ईश्वर से ही प्राप्त करता है।

पृथ्वी पर विद्यमान प्रत्येक जैव–अजैव वस्तु, प्राणी व वनस्पति जगत ईश्वरीय अंश है, इसलिए मनुष्य को प्रकृति–पर्यावरण के प्रति कृतज्ञपूर्ण होना चाहिए व बदले में इसके प्रति संरक्षण व संवर्धन रूपी कर्म यज्ञ सम्पादित करना चाहिये। भगवान श्रीकृष्ण भौतिक जगत में अति सूक्ष्म से वृहत्तर स्तर तक व्याप्त हैं। परन्तु फिर भी इससे परे हैं, इसका कारण है कि मनुष्य अपने तर्क व नीतिशास्त्र में दार्शनिक चिंतन तक ही सीमित रहते हैं। मनुष्य को समझना चाहिये कि प्रकृति ईश्वरीय सत्ता के पूर्ण अधीन है, यदि वर्तमान मानव आधुनिकता की आड़ में उसमें बदलाव करने की चेष्टा करता है तो उसके गंभीर परिणाम भोगने पड़ते हैं।

भगवान श्रीकृष्ण विचार व्यक्त करते हैं कि वो मूर्ख, अल्पज्ञानी भोगवादी मनुष्यों हेतु कभी भी प्रकट नहीं हैं, क्योंकि भोगवादी मनुष्य प्रकृति रूपी देवताओं को समझ व देख नहीं सकते व पर्यावरण को निरंतर क्षति पहुँचाते हैं। भगवद्गीता में चंचल भोगवादी मन को नियंत्रण करने के उपाय बताये गये हैं जिन्हें अपनाने पर पर्यावरण संतुलन स्थापित किया जा सकता है।

भगवद्गीता करती है, वास्वविक ज्ञानी वही है, जो पर्यावरण घटकों व अंशों में ईश्वरीय तत्व को देखता है व उसकी पूजा करता है। उसके प्रति दयालुता, त्याग व सेवा भाव रखता है। मनुष्य को गीता ज्ञान के अनुसार जीवन यापन कर अपना जीवन संतुलित कर पर्यावरण संरक्षण की ओर श्रेष्ठ कदम उठाने चाहियें तभी वह सच्चे अर्थ में श्रीकृष्ण को प्राप्त करता है। जो मानव मात्र भोगवाद को ही सांसारिक वास्तविक सुख मानते हैं वो अपना जीवन नरकीय बना बैठते हैं।

गीता के श्लोकों से यह ज्ञात होता है कि भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी दूरदर्शिता द्वारा यह ज्ञात कर लिया था कि एक समय अवश्य ही ऐसा आयेगा जब मनुष्य पर्यावरण व प्रकृति को अपनी निजी सम्पत्ति समझ लेगा, अतः उन्होंने पर्यावरण संतुलन व संवर्धन को लेकर पहले ही स्पष्ट निर्देश दे रखे हैं। गीता के सोलहवें अध्याय के 12वें श्लोक में मनुष्यों की इन्द्रिय इच्छाओं के आत्मनियंत्रण को मानव सभ्यता की मूल आवश्यकता बताया गया है।

अतः श्रीमद् भगवद्गीता से प्रेरणा लेकर हमें निश्चित ही ऐसे उचित व कल्याणकारी कार्य करने चाहियें जिससे हमारा पर्यावरण व प्रकृति सभी प्रकार की क्षति से मुक्त हो सके व जिससे न केवल समाज बल्कि

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सभी जीवों का जीवन कल्याण व उन्नति को प्राप्त हो सके। प्रकृति को अपना अंश बताकर उसके संरक्षण व संवर्धन हेतु मार्गदर्शन करने के कारण ही भगवान श्रीकृष्ण लोकनायक के रूप में स्थापित हुए हैं।

सन्दर्भ –

1. शिव कुमार ओझा : पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण, बौद्धिक प्रकाशन, प्रयागराज, 2018, पृष्ठ 11
2. के0सी0 श्रीवास्तव : प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाइटेड़ बुक डिपो, इलाहाबाद, 2011, पृष्ठ 15–20
3. डॉ0 भूपेन्द्र : श्रीमद्भगवद्गीता में पर्यावरण की चिंता, लेख, दैनिक जागरण, 27 अप्रैल 2012, **https//:m.jagran.com/blogs/drbhupendra**
4. श्रीमद् ए0सी0 भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद : श्रीमद्भगवद्गीता यथारस, भकित्वेदान्त बुक ट्रस्ट, मुम्बई, 2006, पृष्ठ 117–118
5. डॉ0 भूपेन्द्र : उपरोक्त लेख
6. श्री विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर : श्रीमदभगवद्गीता, श्री केशव जी गौड़ीय मठ, मथुरा, 1997, पृष्ठ 248–250
7. श्रीमदभगवद्गीता : सुमित प्रकाशन, 2008, नई दिल्ली, पृष्ठ 45
8. स्वामी किशोरदास कृष्णदास : श्रीमद्भगवद्गीता (असली लाहौरी गीता), ब्रजवासी पुस्तक भण्ड़ार, हरिद्वार, पृष्ठ 71–73
9. संत श्री आशाराम : श्रीमद्भगवद्गीता, श्री योग वेदांत सेवा समिति 2007, अहमदाबाद, गुजरात, पृष्ठ 166–167
10. श्रीमद ए0सी0 भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद : उपरोक्त, पृष्ठ 420–423
11. श्रीमद्भगवद्गीता : गीता प्रेस गोरखपुर, 1995, पृष्ठ 211–214
12. वही, पृष्ठ 82–87
13. श्री पूर्ण प्रज्ञदास : श्रीमद्भागवतम् कथारूप, भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट, मुम्बई, 2014, पृष्ठ 354
14. श्रील व्यासदेव : लीला पुरुषोत्तम भगवान श्रीकृष्ण, भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट, मुम्बई, 2013, पृष्ठ 10, 17
15. सूरजमल मोहता : साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1991, पृष्ठ 29
16. स्वामी रामसुखदास : श्रीमद्भगवद्गीता हिंदी टीका, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2018, पृष्ठ 760–764
17. बाल गंगाधर तिलक : गीता रहस्य, गीता प्रिंटर्स, पुणे, 1988, पृष्ठ 718